

डॉ. नॉट हेम, नीतिवचन, व्याख्यान 15, नीतिवचन 25-29

© 2024 नॉट हेम और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. नॉट हेम और नीतिवचन की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र संख्या 15, नीतिवचन अध्याय 25-29 है।

बाइबिल की नीतिवचन पुस्तक पर व्याख्यान 15 में आपका स्वागत है। इस व्याख्यान और अगले व्याख्यान में, हम नीतिवचन के संग्रह संख्या पाँच, अध्याय 25 से 29 को देखेंगे।

अब इस व्याख्यान में, मैं विशेष रूप से अध्याय 25 में छंदों का एक संग्रह देखूंगा, और मैं उनकी एक कल्पनाशील व्याख्या प्रस्तावित करने जा रहा हूँ।

वे तीन समूहों में आते हैं, लेकिन उनमें से तीनों को अध्याय 25 के माध्यम से फैलाया गया है, और मैंने उन्हें पहले जो सुझाव दिया है उसके आधार पर एक कल्पनाशील पाठन दूंगा, विशेष रूप से इस बार रूपक के पहलू पर ध्यान केंद्रित कर रहा हूँ और रूपकों की कल्पनात्मक व्याख्या कैसे करूँ। मुझे आशा है कि मैं इस व्याख्यान में एक तरफ कल्पनाशील पढ़ने और दूसरी तरफ काल्पनिक पढ़ने के बीच के अंतर पर कुछ और प्रतिबिंब शामिल करूंगा, और फिर मैं उन चीजों में से एक पर भी विचार करूंगा जो कई लोग, मैंने कई लोगों को कहते सुना है, विशेष रूप से अधिक रूढ़िवादी ईसाई हलकों से, जहां वे बाइबिल को शाब्दिक रूप से लेने पर जोर देते हैं। और मैं उस पर कुछ टिप्पणियाँ करूंगा, कुछ आलोचनात्मक टिप्पणियाँ, जिससे हमें नीतिवचन की पुस्तक और सामान्य रूप से कविता के कल्पनाशील पाठों से एक व्यापक व्याख्यात्मक परिप्रेक्ष्य प्राप्त करने में मदद मिलेगी कि कैसे ईसाई और यहूदी जो हमारे धर्मग्रंथों के प्रति वफादार रहना चाहते हैं, सक्षमतापूर्वक और कुशलतापूर्वक और बुद्धिमानी से बाइबिल के ग्रंथों को पढ़ना चाहिए।

तो चलिए शुरू करते हैं। सबसे पहले मैंने अध्याय 25 पढ़ा। यह कल्पनाशील पाठन के मेरे तीन उदाहरणों में से पहला है।

मैंने श्लोक 21 से 22 तक पढ़ा। यह एक बहुत प्रसिद्ध मार्ग है क्योंकि इसे प्रेरित पौलुस ने रोमनों को लिखे अपने पत्र में अध्याय 12, श्लोक 20 में भी दोहराया है, जहां वह प्रतिशोध के अनुरूप लोगों को प्रोत्साहित कर रहा है, परन्तु अपने शत्रुओं के प्रति उदार होना। और वह नीतिवचन की पुस्तक से यह कहने के लिए प्रेरित होता है और अपनी बात कहने के लिए, धर्मग्रंथ का हवाला देते हुए, तर्क और आध्यात्मिक अधिकार को मजबूत करने के लिए जिसे वह रोम में ईसाइयों को अपनी सलाह में रखना चाहता है, रचनात्मक रूप से फिर से इसका उपयोग करता है।

तो ये रहा। यदि तेरे शत्रु भूखे हों, तो उन्हें खाने के लिये रोटी दो। और यदि वे प्यासे हों, तो उन्हें पानी पिलाओ।

क्योंकि तू उनके सिरों पर आग के कोयले ढेर करेगा, और यहोवा तुझे प्रतिफल देगा। यदि तुम्हारे शत्रु भूखे हों तो उन्हें खाना खिलाओ और पानी पिलाओ। क्योंकि तू उनके सिरों पर आग के कोयले ढेर करेगा, और यहोवा तुझे प्रतिफल देगा।

अब यहां, ज्यादातर लोगों को इसे काफी कल्पनाशील तरीके से पढ़ने में कोई समस्या नहीं है, यह मानते हुए कि खाना-पीना, किसी के दुश्मन को खिलाना जरूरी नहीं है कि इसे शाब्दिक रूप से लिया जाए, लेकिन इसे आतिथ्य के विभिन्न संदर्भों में आसानी से लागू किया जा सकता है। उदारता, मित्रता की, नम्रता की, उन लोगों के प्रति दया की जो किसी का बुरा चाह रहे हों, या यहाँ तक कि किसी का शारीरिक रूप से हिंसक विरोध भी कर रहे हों। यहां एक शत्रु का संदर्भ बहुत सामान्य है। यह स्पष्ट नहीं है कि यह किस प्रकार का शत्रु है, लेकिन शत्रु के साथ अच्छा व्यवहार किया जाना चाहिए।

और पद 22 के अनुसार इसका परिणाम दुगना है। पहला, तू उनके सिरों पर आग के कोयले ढेर कर देगा। नंबर दो, और प्रभु तुम्हें पुरस्कार देगा।

अब, मैंने पहले ही कहा है कि ज्यादातर लोग आसानी से पहचान लेते हैं कि इसे शाब्दिक रूप से नहीं लिया जाना चाहिए क्योंकि किसी के दुश्मन के साथ दयालु व्यवहार करके, कोई सचमुच उनके सिर पर जलते हुए कोयले नहीं फेंकता है जो फिर किसी तरह उनके सिर पर मुकुट या इस तरह कुछ और बने रहते हैं। और निःसंदेह, जिन शत्रुओं के साथ ऐसा व्यवहार किया जाएगा वे वस्तुतः उस पर बिल्कुल भी दया नहीं करेंगे। बल्कि विचार यह है कि किसी सामान्य प्रकार के शत्रु को किसी की दयालुता से अपनी शत्रुता से पीछे हटने में एक तरह से शर्म आती है।

ये तो कमाल की सोच है। मैंने अपने जीवन में बहुत सी चीज़ें देखी हैं, और यहां मैं व्यक्तिगत कहानियाँ साझा नहीं करना चाहता हूँ, लेकिन मैं कुछ व्यक्तिगत अंतर्दृष्टियाँ साझा करना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि मैं इसे विशेष रूप से ईसाई मंत्रालय, दोनों देहाती मंत्रालय, बल्कि ईसाई मंत्रालय संगठनों के अन्य क्षेत्रों में मंत्रालय की पृष्ठभूमि के खिलाफ कहना चाहता हूँ।

और मैं कुछ सिफारिशें करना चाहता हूँ, उम्मीद है कि जब आप इस व्याख्यान से जुड़ेंगे और यहां जो कुछ भी आप सीखेंगे उसका उपयोग दूसरों को सिखाने में करेंगे, तो आपको मदद मिलेगी। और यह यही है। और यह मेरा अनुभव निश्चित रूप से देहाती मंत्रालय में, बल्कि अन्य मंत्रालय संगठनों में भी रहा है।

अर्थात्, जब लोग मदरसा से बाहर आते हैं तो अक्सर कहते हैं, यह, वह, और वह, मुझे कभी भी मदरसा में नहीं पढ़ाया गया। अक्सर मदरसा के अनुभव के बाद लोग अपने मंत्रालयों में कुछ वर्षों के लिए असफल महसूस करते हैं क्योंकि किसी तरह उन्हें लगता है कि हालांकि उन्हें सभी प्रकार के धार्मिक विषयों के बारे में सिखाया गया था, लेकिन अप्रत्याशित परिस्थितियों से निपटने के दौरान उन्हें अक्सर आध्यात्मिक ज्ञान और व्यावहारिक पेशेवर जानकारी नहीं सिखाई गई थी। और ऐसे कई हैं जिनका मैं उल्लेख कर सकता हूँ।

उनमें से एक, उदाहरण के लिए, आम तौर पर चर्च के भीतर दुर्व्यवहार है, लेकिन विशेष रूप से एक महत्वपूर्ण मुद्दा मुझे लगता है कि इन दिनों दुनिया भर के कई चर्चों में यौन शोषण या बाल

शोषण की स्थिति एक ज्वलंत मुद्दा है। मैं इस समय एक मिनट में इसके बारे में बात नहीं करना चाहता क्योंकि यह नीतिवचन की पुस्तक के लिए प्रासंगिक नहीं है, और यह नीतिवचन की पुस्तक के बारे में एक व्याख्यान है, लेकिन मैं यह स्वीकार करना चाहता हूँ कि यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा है कई चर्चों और संप्रदायों में अभी तक पर्याप्त रूप से निपटा नहीं गया है, मुझे लगता है कि कुछ ऐसा है जो वास्तव में महत्वपूर्ण है जिसे चर्च पकड़ लेगा। लेकिन मैं जिस पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ वह एक अन्य प्रकार का दुरुपयोग है, और यह कुछ ऐसा है जिसे मैंने देखा है, मैंने व्यक्तिगत रूप से खुद को दुखद रूप से अनुभव किया है, लेकिन साथ ही, मैंने इसे यूरोप, अफ्रीका और दोनों में विभिन्न संदर्भों में कई सहयोगियों के साथ देखा है। यहाँ उत्तरी अमेरिका में भी जहाँ मैं अब रहता हूँ और काम करता हूँ।

और यह वह है, जो लोग चर्च द्वारा नियोजित हैं या चर्च के भीतर स्वयंसेवक हैं, या अंशकालिक, पूर्णकालिक, या जो भी हों, उनके साथ कभी-कभी गलत और अनुचित व्यवहार किया जाता है, या तो एक संगठन के रूप में चर्च संगठन और उसके भीतर के नेताओं द्वारा वह संगठन, या कभी-कभी उन संगठनों या उन चर्चों के सदस्यों द्वारा। और नियमित रूप से, लोगों को सौम्य और दयालु होने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, लगभग कहने की बात यह है कि दुर्व्यवहार को आसानी से सहने के लिए। मुझे लगता है कि यह एक गंभीर गलती है।

हालाँकि, यह आंशिक रूप से नीतिवचन 25 जैसे बाइबिल ग्रंथों और नए नियम के ग्रंथों के गलत पढ़ने पर आधारित है। और मैं यहाँ नए नियम की ओर जाता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि यह विशेष रूप से ईसाई मंत्रालय में एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। और मुझे आशा है कि मेरे व्याख्यान के इस भाग से, कम से कम कुछ लोगों को कुछ ज्ञान प्राप्त होगा, न केवल स्वयं के लिए, बल्कि यह भी कि वे युवा ईसाई नेताओं को इस बात की अधिक समग्र समझ विकसित करने में कैसे मदद करते हैं कि उन्हें ईसाई मंत्रालय के संदर्भों में दुर्व्यवहार से कैसे निपटना चाहिए।

दूसरा पाठ जिसका मैं संदर्भ देना चाहता हूँ वह मैथ्यू 6 से है, जो कि पहाड़ी उपदेश में है, जहाँ यीशु स्वयं साक्ष्य देते हुए दिखाई देते हैं, जिसका आम तौर पर यह अर्थ लगाया जाता है कि लोगों को दुर्व्यवहार सहना चाहिए। यीशु यहाँ एक ऐसे व्यक्ति के संबंध में बोल रहे हैं जो मंदिर में भगवान के लिए बलिदान लाता है, और फिर उनसे आग्रह करता है, यदि आपके भाई के पास आपके खिलाफ कुछ है, तो अदालत में जाने से पहले उनसे मिलें, और जो कुछ भी बकाया है उसे चुका दें, अन्यथा वे तुम्हें अदालत में ले जाएंगे और जेल में डाल देंगे, और जब तक तुम उसका एक-एक पैसा चुका न दोगे, तब तक वहीं रहोगे। इसे अक्सर कुरिन्थियों को लिखे उनके एक पत्र में पॉल की सलाह के साथ पढ़ा जाता है, जहाँ वह कहते हैं कि ईसाइयों को अपने विवादों को निपटाने के लिए गैर-ईसाई अदालतों में नहीं जाना चाहिए, बल्कि उस स्थिति में आने से पहले उन्हें सुलझा लेना चाहिए।

लगभग सार्वभौमिक रूप से, अब ईसाई मंत्रालय के कई दशकों के मेरे अनुभव में, इन ग्रंथों, इन तीन ग्रंथों की एक-दूसरे के साथ संयोजन में लगातार व्याख्या की गई है ताकि उन लोगों को हतोत्साहित किया जा सके जो दुर्व्यवहार के शिकार हैं और उन्हें कानूनी तरीकों या अन्य तरीकों से अपना बचाव करने से रोकते हैं। जो उनके निपटान में हैं। मुझे ऐसा लगता है कि सार्वभौमिक तौर पर इन ग्रंथों की व्याख्या दुर्व्यवहार के पीड़ितों से बात करने और उन्हें खुश करने के रूप में

की गई है। मुझे लगता है कि यह अपने आप में एक भयानक दुर्व्यवहार और लगातार प्रणालीगत दुर्व्यवहार है जो दशकों से ईसाई सांस्कृतिक परिवेश में कायम है, शायद इससे भी लंबे समय तक।

और मुझे लगता है कि यह एक बुराई है जिसे संबोधित करने की आवश्यकता है, और मैं इसे अभी कर रहा हूँ। जब हम यीशु के स्वयं के शब्दों को विशेष रूप से देखते हैं, तो यह सबसे स्पष्ट है। यीशु पीड़ित से बात नहीं कर रहे हैं।

वह अपराधी से बात कर रहा है। क्योंकि यदि अपराधी, जिस व्यक्ति को यहाँ यीशु ने संबोधित किया है, यीशु की सलाह का पालन नहीं करता है, तो उसे अदालत में घसीटा जाएगा और जेल में डालने की हद तक दोषी पाया जाएगा। और इसलिए यीशु यहाँ बहुत स्पष्ट रूप से अनुशंसा कर रहे हैं कि पापी, अपराधी, दुर्व्यवहार करने वाला, पीड़ित करने वाला वह व्यक्ति है जिसे अदालत में घसीटे जाने से बचना चाहिए और अपने गलत काम पर पश्चाताप करना चाहिए और उस व्यक्ति के साथ सुधार करना चाहिए जिसके साथ उन्होंने दुर्व्यवहार किया है।

पॉल के पत्र में, यह कम स्पष्ट है, और मुझे नहीं लगता कि उनका मतलब पीड़ितों और पीड़ितों और दुर्व्यवहार करने वालों के बीच कोई अंतर करना है, लेकिन वह जो कह रहे हैं वह यह है कि जो लोग एक-दूसरे के विरोधी हैं, साथी ईसाई हैं, उन्हें होना चाहिए अदालत जाने के बजाय एक-दूसरे से मेल-मिलाप करें। लेकिन निश्चित रूप से निहितार्थ यह होना चाहिए, अगर यह प्रेरित पॉल है जो बोल रहा है, तो यह नहीं कि जिन लोगों के साथ दुर्व्यवहार किया जा रहा है, उन्हें बस इसे सहन करना चाहिए, बल्कि यह कि विवाद में जो लोग गलत हैं, उन्हें अपने गलत काम को स्वीकार करना चाहिए, पश्चाताप करना चाहिए इसे और उस व्यक्ति के साथ इसे ठीक करें जिसके साथ उन्होंने दुर्व्यवहार किया है या जिसका फायदा उठाया है या उससे चोरी की है या उसके साथ दुर्व्यवहार किया है या जो कुछ भी किया है। यह अब मुझे नीतिवचन अध्याय 18 पर वापस लाता है, और मैं यहां कहना चाहता हूँ कि मैं सबसे अधिक विश्वास करता हूँ, और मैं अकेला नहीं हूँ, बाइबिल के विद्वानों के बीच एक बहुत मजबूत आम सहमति है, कि नीतिवचन अध्याय 25 से 29 पर बहुत ध्यान दिया गया है समाज में नेताओं के लिए।

और पद 21 में जिस व्यक्ति को यहां संबोधित किया जा रहा है, उसका भी यही मामला है, यदि तेरे शत्रु भूखे हों, तो उन्हें खाने के लिए रोटी दो, क्योंकि तू उनके सिर पर आग के कोयले ढेर करेगा। और अब मैं चाहता हूँ कि हम वास्तव में, इन अन्य ग्रंथों के बारे में मैंने जो कहा है, उसके आलोक में, इस अंश को कल्पना के साथ पढ़ें। लेकिन कल्पना में यह काल्पनिक नहीं है, बल्कि मानवीय गतिशीलता, मानवीय संपर्क की गतिशीलता के बारे में यथार्थवादी है, खासकर जब चीजें मायने रखती हैं, जब चीजें दांव पर होती हैं, नेताओं के साथ।

और यही वह बात है, जो भावी नेता के लिए यहां अनुशंसित की जा रही है, जिसे इन कहावतों में संबोधित किया गया है वह संघर्ष की स्थिति है, और शायद उच्च दांव के संघर्ष की स्थिति है। यह सामान्य बातों के बारे में नहीं है, यह गंभीर मामलों के बारे में है, और यहां जिन शत्रुओं की कल्पना की जा रही है उनके बीच जो कुछ भी होता है उसका परिणाम अन्य लोगों के लिए भी मायने रखेगा, न कि केवल उस व्यक्ति के लिए जिसे संबोधित किया जा रहा है। और यह

सिफ़ारिश शांति या निष्क्रियता की नहीं है, बल्कि एक उच्च जोखिम वाली संकट की स्थिति से बुद्धिमानी से जुड़ने का निमंत्रण है जो संभावित रूप से उस व्यक्ति के लिए खतरनाक है जिससे बात की जा रही है, और शायद उनकी देखभाल के तहत अन्य लोगों के लिए भी, जिनके लिए वे हैं जिम्मेदार नेताओं के रूप में।

और इसलिए, जब इन नेताओं को अब यहां अपने दुश्मनों के प्रति दयालु होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि उन्हें डोरमैट बनने के लिए आमंत्रित किया जाता है, यहां एक और रूपक है, ऐसे लोग जो जानबूझकर खुद को दूसरों के साथ दुर्व्यवहार करने देते हैं। बल्कि, इस प्रकार की दयालुता वास्तव में बहुत आक्रामक होती है, क्योंकि उस दयालुता का परिणाम शत्रु को, प्रतिद्वंद्वी को, अपनी शत्रुता से बाज आने के लिए शर्मिंदा करना होता है। और जो चित्र प्रस्तुत किया जा रहा है वह उनके सिर पर जलते अंगारों के ढेर लगाने का है।

वास्तव में ऐसा करना बहुत आक्रामक बात है। यह बहुत ही सशक्त, हिंसक कार्य है। तो, इस प्रतिद्वंद्वी को सिर्फ प्रस्तुत नहीं किया जा रहा है, बल्कि भावी नेता की दयालुता से इस प्रतिद्वंद्वी पर हावी किया जा रहा है।

तो यह संभवतः वास्तविक दुनिया में विस्तार से कैसे काम करेगा? खैर, मुझे ऐसा लगता है कि जिस नेता को यहां संबोधित किया जा रहा है, उसे अपने प्रतिद्वंद्वी को अंतिम बात कहने देने या बहस जीतने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता है। बल्कि, कहावत भावी नेता को प्रतिद्वंद्वी के साथ बुद्धिमानी से बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित कर रही है जो प्रतिद्वंद्वी की चिंताओं को उदार और दयालु तरीके से संबोधित करने का प्रयास करता है। लेकिन उस हद तक नहीं जहां तर्क खो जाता है, बल्कि इस तरह से कि प्रतिद्वंद्वी को बेहतर तर्क और यह देखने में मदद मिलती है कि जिस नेता को यहां संबोधित किया जा रहा है वह क्या हासिल करने की कोशिश कर रहा है ताकि प्रतिद्वंद्वी एक सहयोगी बन जाए और तर्क का विजेता नहीं।

यही इस कहावत का प्रभाव है। अब मैं दूसरे परिणाम की ओर बढ़ना चाहता हूं जिसका वादा यहां इन कहावतों में किया गया है, अर्थात् प्रभु आपको पुरस्कृत करेगा। और मैं यहां फिर से न केवल इन अंशों की व्याख्या से, बल्कि व्यक्तिगत अनुभव से भी बोल रहा हूं।

मैंने ये बार-बार देखा है। जब हम आध्यात्मिक रूप से कार्य करते हैं, जब हम नेतृत्व, उदारता और दयालुता के साथ कार्य करते हैं, जब हम नेता के रूप में अपनी क्षमताओं में बुद्धिमानी से कार्य करते हैं और अपने विरोधियों को भी यह देखने में मदद करते हैं कि क्या सही है, अक्सर उनकी जानबूझकर की गई मांगों या जो भी हो, के आगे झुके बिना निकट ही एक महान आध्यात्मिक पुरस्कार है। नंबर एक, भगवान वास्तव में हमें वह हासिल करने में मदद करके पुरस्कृत करेंगे जो करना आवश्यक है और ईसाई मंत्रालय के काम में हमें जिसके लिए जिम्मेदार बनाया जा रहा है उसमें सफल होंगे।

दूसरी बात यह है कि कई बार चूंकि हम उदार रहे हैं, इसलिए ईश्वर का आशीर्वाद काम को और भी निखारेगा। जबकि हमारे विरोधियों की मूर्खतापूर्ण मांगों के प्रति निष्क्रिय समर्पण कार्य की

सार्थकता और प्रभावशीलता को नष्ट कर देगा। जैसे ही मैं कहावतों के इस विशेष समूह पर अपने चिंतन को समाप्त करता हूँ, एक अंतिम बात है जो मैं कहना चाहता हूँ।

मेरी पिछली टिप्पणियों पर वापस जाएं तो यह काफी नियमित है कि ईसाई मंत्रालय में लोग, विशेष रूप से नेतृत्व स्थितियों में, शत्रुता का सामना करते हैं। जिस शत्रुता का वे सामना करते हैं, वह अक्सर, बहुत बार, गैर-ईसाइयों से नहीं होती, या तो अन्य धर्मों के लोगों से या किसी भी धर्म के लोगों से नहीं होती, बल्कि अक्सर जिस शत्रुता का वे सामना करते हैं, वह साथी ईसाइयों से होती है। इसमें से अधिकांश दयालु और उदार तरीका नहीं है।

और लोग अक्सर, मैंने इस बारे में कई साथी ईसाई नेताओं से बात की है, और कई ईसाई नेता इससे बहुत आहत हुए हैं, बहुत निराश, हताश और अक्सर आहत हुए हैं, क्योंकि वे उचित तरीकों से वापस नहीं लड़ते हैं, जैसा कि यह कहावत सुझाती है, और जैसा कि यीशु और पॉल अनुशंसा करते हैं, लेकिन वे हार मान लेते हैं और खुद को पीड़ित होने देते हैं। और इसका अंतिम परिणाम दुख, कड़वाहट और लंबे समय तक चलने वाली भावनात्मक क्षति है। मैंने ये बार-बार देखा है।

मैं आपमें से जो भी आज यह व्याख्यान सुन रहा है, और जो ईसाई मंत्रालय में शामिल होने की उम्मीद कर रहे हैं, उनसे कई बातें कहना चाहता हूँ। नंबर एक, शत्रुता को पूरा करने और उससे निपटने की अपेक्षा करें। दूसरे, यह अपेक्षा करें कि वह शत्रुता गैर-ईसाइयों से नहीं, बल्कि साथी ईसाई विश्वासियों से आए, कभी-कभी सहकर्मियों से, कभी-कभी उन्हीं लोगों से जिनकी आप सेवा और सेवा करने का प्रयास कर रहे हैं।

तीसरा, जैसे-जैसे आप मंत्रालय में नेतृत्व के अवसरों में वृद्धि करेंगे, जैसे-जैसे आपका नेतृत्व बढ़ेगा, मैं आपसे कहना चाहता हूँ, तीसरा, आपके दुश्मनों की गुणवत्ता, शक्ति और प्रभाव बढ़ेगा। आप नेतृत्व में जितने अधिक महत्वपूर्ण होंगे, उतने ही अधिक सक्षम, उतने ही अधिक प्रतिबद्ध होंगे और शायद कभी-कभी आपके दुश्मन उतने ही अधिक दुष्ट होंगे। हालात से समझौता करो।

अपने व्यक्तिगत अनुभव से, मैं कहना चाहता हूँ, मुझे वास्तव में अपने दुश्मनों पर बहुत गर्व है। मेरे पास ऐसे शत्रु हैं जिनसे लड़ने लायक हैं, और मैं भगवान की स्तुति और महिमा के लिए उन्हें हराना चाहता हूँ। क्योंकि जब मुझे पता चलता है कि मैं जो कर रहा हूँ, भगवान की सेवा करने की कोशिश में मैं सही हूँ, तो मुझे उन लोगों से निपटना होगा जो इसे नहीं देखते हैं।

मैं एक उदाहरण देना चाहता हूँ। मैं अपने आप को उसी तरह की उपलब्धि की श्रेणी में नहीं रखना चाहता, लेकिन हम इसे, उदाहरण के लिए, डिट्रिच बोन्होफ़र के काम में देखते हैं। डायट्रिच बोन्होफ़र ने बिल्कुल वही किया जो नीतिवचन 25, 21 निम्नलिखित अनुशंसा कर रहा है।

हिटलर के अधीन जर्मन शासन से निपटने के अपने उदार तरीके में, वह अपने समय में जो कुछ भी चल रहा था उससे निपटने के तरीके में कई साथी जर्मनों के सिर पर आग के कोयले ढेर कर

रहा था। तो ये कहावत कमजोरों के लिए नहीं है। यह उन मजबूत, साहसी और बुद्धिमान लोगों के लिए एक कहावत है जो सही के लिए खड़े होते हैं।

मैं केवल यह कहने के लिए एक और अपील के साथ समाप्त करता हूँ, हमें उस दुरुपयोग को रोकने की जरूरत है जो कभी-कभी बाइबिल के कुछ अंशों की गलतफहमी के कारण ईसाई चर्च में होने की अनुमति दी जाती है। और ईसाई प्रेम की गलतफहमी इस हद तक बढ़ जाती है कि हम दुर्व्यवहार स्वीकार कर लेते हैं, या तो खुद का या दूसरों का जो हमारी देखरेख में हैं। और ऐसा नहीं होना चाहिए।

तो, आप देख सकते हैं कि मैं यहां दृढ़ता से बोलता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि यह एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जहां खराब शिक्षण के कारण बहुत से लोगों को अनावश्यक रूप से परेशानी उठानी पड़ी है। और यहां मुझे लगता है कि मैंने इन छंदों का एक कल्पनाशील वाचन प्रस्तुत किया है जो जानबूझकर नहीं है, यह काल्पनिक नहीं है, लेकिन बाइबिल के दोनों ग्रंथों पर आधारित है, रूपकों पर ध्यान दे रहा है, लेकिन मेरे खुद के व्यापक ज्ञान पर भी आधारित है व्यक्तिगत अनुभव और हमलावरों, दुर्व्यवहार करने वालों और पीड़ितों के साथ प्रतिस्पर्धा और टकराव में दुर्व्यवहार करने वाले और कमजोर लोगों के लिए सामाजिक और व्यक्तिगत न्याय की भावना पर आधारित। अब मैं अन्य कहावतों के दो समूहों पर आता हूँ, अध्याय 25 में भी।

वैसे, जिन तीन उदाहरणों का मैं यहां उल्लेख कर रहा हूँ वे लौकिक जोड़े हैं। इनमें से पहला, वास्तव में मैं तीसरे, पहले का उल्लेख करूंगा। यह श्लोक 27 से 28 में है।

मैं बस इन छंदों को पढ़ने जा रहा हूँ और फिर उनकी अपनी व्याख्या प्रस्तुत करूंगा। अधिक शहद खाना या सम्मान के ऊपर सम्मान की तलाश करना अच्छा नहीं है। जिस में आत्मसंयम नहीं, वह टूटे हुए नगर के समान है।

मैं उन दो छंदों को दोहराऊंगा। अधिक शहद खाना या सम्मान के ऊपर सम्मान की तलाश करना अच्छा नहीं है। जिस में आत्मसंयम नहीं, वह टूटे हुए नगर के समान है।

इन श्लोकों में क्या चल रहा है? अधिकांश लोग इसे पढ़ते हैं और कहते हैं, चलो आगे बढ़ते हैं। और ईमानदारी से कहूँ तो, मैं नीतिवचन की पुस्तक के साथ 25 वर्षों से अधिक समय से काम कर रहा हूँ। और कई-कई वर्षों तक मैंने इस पर कभी कोई विशेष ध्यान नहीं दिया।

लेकिन रूपक सिद्धांत और रूपक व्याख्या में अपने प्रशिक्षण के माध्यम से, मैं अब इन कहावतों की कुछ सूक्ष्मताओं और वास्तव में महत्वपूर्ण प्रभाव को समझने के प्रति अधिक संवेदनशील हो गया हूँ। क्योंकि यहां हमारे पास एक बेहतरीन सलाह है जो हमारी जिंदगी बदल सकती है। मुझे समझाने दो।

तो वास्तव में इन दो श्लोकों में से पहला, श्लोक 27, दूसरे भाग में सीखे जाने वाले मुख्य पाठ के लिए रास्ता तैयार करने जैसा है। और यह श्लोक 28 के व्यापक पाठन का निर्माण करता है। तो, आइए देखें कि श्लोक 27 ऐसा कैसे करता है।

तो सबसे पहली बात तो ये कि ज्यादा शहद खाना अच्छा नहीं है। यह अच्छा क्यों नहीं है? शहद बढ़िया है। इसका स्वाद लाजवाब है।

इसमें अविश्वसनीय रूप से स्वस्थ विटामिन और सभी प्रकार के स्वस्थ तत्व हैं। इसलिए, आधुनिक दुनिया में लोग लगातार हमें शहद खाने की सलाह दे रहे हैं। चॉकलेट से बहुत बेहतर।

आपके लिए बहुत अधिक स्वस्थ। यह स्वाभाविक है और इस तरह की सभी चीजें हैं। तो प्राचीन काल का यह बुद्धिमान व्यक्ति, चाहे वह कोई भी हो, भावी नेता से यह क्यों कह रहा है कि बहुत अधिक शहद मत खाओ? खैर, पुरानी समझ के कारण कि किसी भी अच्छी चीज़ की बहुत अधिक मात्रा अच्छी चीज़ नहीं होती है।

चॉकलेट के साथ भी यही बात है। यह और भी स्पष्ट है। चॉकलेट बहुत अच्छी है।

आइसक्रीम बहुत अच्छी है। स्टेक बहुत अच्छा है। लेकिन अगर हम इसे बहुत अधिक खाते हैं, तो यह वास्तव में हमारे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होगा और यहां तक कि हमारे स्वयं के भावनात्मक अल्पकालिक भाव जैसे कि फूला हुआ, थका हुआ, थका हुआ और सिर्फ सुस्त महसूस करना क्योंकि हमने बहुत अधिक खाया है। अची बात है।

और इसलिए, यह वास्तव में प्रतिकूल कहावत है, बहुत अधिक शहद मत खाओ, हालांकि शहद बहुत बढ़िया है, अब आगे क्या होगा इसके लिए परिदृश्य तैयार कर रहा है। क्योंकि कहावत का दूसरा भाग है, और इसलिए सम्मान के ऊपर सम्मान की तलाश करना अच्छा नहीं है। वह अच्छा क्यों नहीं है? खैर, सम्मान अच्छी चीज़ है, है ना? सम्मान उच्च सामाजिक स्थिति के बारे में है।

और याद रखें कि हम यहां इन सभी अध्यायों में कहावतों से निपट रहे हैं जो विशेष रूप से नवोदित नेताओं, ऐसे लोगों को संबोधित हैं जो उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा में हैं और अक्सर अपने समुदायों में पदानुक्रम में उच्च हैं। और जिस व्यक्ति को एक परिपक्व, सक्षम नेता बनने के लिए तैयार किया जा रहा है, जो व्यापक समाज और उसके समुदाय को लाभ पहुंचाता है, उसे अब प्रोत्साहित किया जाता है कि वह उन चीज़ों की बहुत अधिक तलाश न करें, जिनकी उन्हें अच्छे नेता बनने के लिए ज़रूरत है, अर्थात् उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा और समुदाय के अपने साथी सदस्यों के बीच सामाजिक स्थिति और उच्च सम्मान। क्योंकि किसी भी अच्छी चीज़ की बहुत अधिक मात्रा बिल्कुल भी अच्छी चीज़ नहीं होती है।

क्योंकि यदि वह व्यक्ति हमेशा और केवल उन लोगों का अनुमोदन प्राप्त करने के लिए अतिसंवेदनशील हो जाता है जिनका वे नेतृत्व कर रहे हैं, तो वे अब नेता नहीं हैं। उनका नेतृत्व किया जा रहा है। अचानक कुत्ते ने पूँछ हिलाई।

चूँकि नेता अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा, अपनी अनुमोदन दर और जिन लोगों का वे नेतृत्व कर रहे हैं उन्हें पसंद किये जाने को लेकर बहुत चिंतित रहते हैं, इसलिए वे नेता के रूप में अप्रभावी हो जाते हैं। लेकिन यह बिल्कुल भी नहीं है। और फिर, मैं एक स्पष्ट रूप से काफी महत्वहीन कहावत का कल्पनाशील पाठ जारी रख रहा हूँ।

और यह यही है. इसका एक और पक्ष है और इसका एक और चरम है। क्योंकि हम भी देखते हैं, और मुझे वास्तव में बस, नहीं, मेरे पास तीन बिंदु हैं, बिल्कुल।

तो इसका एक और पक्ष है, बहुत अधिक सम्मान पाने की चाहत का दूसरा चरम, निश्चित रूप से उन लोगों की अनुमोदन दर प्राप्त करने के बारे में नहीं है जिनका नेतृत्व किया जा रहा है, बल्कि दूसरा चरम यह है कि नेता अपनी ताकत बढ़ाने के लिए बेतहाशा कोशिश कर रहे हैं अपनी स्वयं की असुरक्षाओं या अपने डर और चिंताओं को दूर करने के लिए चालाकीपूर्ण और अक्सर आक्रामक, जबरदस्ती और यहां तक कि आपराधिक तरीकों के माध्यम से उच्च सामाजिक स्थिति प्राप्त करना। क्योंकि, निःसंदेह, आप पदानुक्रम में जितने ऊपर होंगे, पूरी स्थिति उतनी ही अधिक जोखिमपूर्ण होगी, और आपके दुश्मन जितने अधिक शक्तिशाली होंगे, उतने ही अधिक खतरनाक होंगे। तो इसका प्रतिकार करने का एक स्वाभाविक तरीका यह है कि इससे बचने का प्रयास करें।

और खतरा यह है कि नेता निरंकुश होकर सत्ता के भूखे बन जाएं, जिन लोगों का वे नेतृत्व कर रहे हैं उनके साथ ज़बरदस्ती करें और उन पर अधीनता के लिए दबाव डालें। जिस तरह बहुत अधिक शहद अच्छा नहीं है, उसी तरह बहुत अधिक सम्मान की चाहत भी बिल्कुल भी अच्छी नहीं है। और यह मुझे तीसरे की ओर ले जाता है जो वास्तव में एक तरह से दोनों तरफ से जुड़ा हुआ है, और मुझे यकीन है कि जब आप इसे सुन रहे हैं तो आप तुरंत एक या दो लोगों के बारे में सोच सकते हैं जिन्हें आप व्यक्तिगत रूप से जानते हैं और दूसरों के बारे में जिन्हें आप जानते हैं। अंतर्राष्ट्रीय समाचारों से जानिए उन लोगों के बारे में जो अक्सर मनोरोगी कहे जाने वाले रोग से प्रभावित हो रहे हैं।

वे ऐसे लोगों से घिरे रहते हैं जो लगातार उनकी प्रशंसा करते हैं, लगातार कहते हैं, आप ही सब कुछ हैं, आप सबसे अद्भुत हैं, आप कुछ भी गलत नहीं कर सकते, वे ऐसे दोस्तों से घिरे रहते हैं जो कभी आपकी आलोचना नहीं करते हैं और केवल आपको एक महान नेता के रूप में स्वीकार करते हैं। और निश्चित रूप से होता यह है कि वे इन लोगों को भावनात्मक रूप से बचकाने तानाशाहों में बदल रहे हैं जो जो चाहते हैं वही करते हैं क्योंकि उनके आस-पास के सभी लोग लगातार उनकी पुष्टि कर रहे हैं चाहे वे कुछ भी करें, चाहे कितना भी अपमानजनक हो, चाहे कितना भी मूर्ख हो, चाहे कितना ही मूर्खतापूर्ण क्यों न हो चीज़ें दमनकारी हैं, वे जो कर रहे हैं वह कितना शोषणकारी है। क्या आप देख सकते हैं कि यह कहावत कितनी शक्तिशाली है? लेकिन यह सब कुछ नहीं है, यह सिर्फ एक कहावत है जो वास्तव में अच्छी कहावत का निर्माण कर रही है।

आइए इसे देखें, श्लोक 28, बिना दीवारों के टूटे हुए शहर की तरह, वह व्यक्ति है जिसमें आत्म-नियंत्रण का अभाव है। तो, कहावत किस बारे में है? जैसा कि हम जानते हैं, मुझे लगता है कि यह सहज है, यह आत्म-नियंत्रण के बारे में है। आत्मसंयम कहाँ महत्वपूर्ण है? खैर, आत्म-नियंत्रण उन सभी परिस्थितियों में महत्वपूर्ण है जहां हमारे पास हमारे लिए अच्छे से अधिक संसाधन और अवसर हैं।

तभी हमें आत्म-नियंत्रण की आवश्यकता होती है। ठीक वैसे ही जैसे जब बहुत अधिक शहद, बहुत अधिक चॉकलेट, बहुत अधिक पैसा, बहुत अधिक यौन संतुष्टि हमारे उपभोग की प्रतीक्षा कर रही हो। यहां कहावत विशेष रूप से, निश्चित रूप से, शक्ति पर केंद्रित है, विशेष रूप से राजनीतिक शक्ति पर, लेकिन मुझे लगता है कि इन सभी अन्य क्षेत्रों को भी इस कहावत द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से संबोधित किया गया है।

लेकिन मैं अब सत्ता पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूं।' सम्मान के संबंध में, पिछले श्लोक में, नेता के लिए प्रलोभन आत्म-नियंत्रण करने का नहीं, बल्कि अधिक से अधिक राजनीतिक शक्ति हथियाने का है। यहाँ मुद्दा यही है।

और जितना अधिक वे ऐसा करते हैं, और जितना अधिक वे स्वयं को अपने नेतृत्व में सबसे महत्वपूर्ण चीज़ के रूप में रखते हैं, उनका नेतृत्व उनके बारे में हो जाता है, न कि उन लोगों के बारे में जिनका उन्हें नेतृत्व करना चाहिए। मुद्दा यह है कि वे अपने लोगों का नेतृत्व कर रहे हैं। वे वहां लोगों के लिए हैं, अपने लिए नहीं।

और यह अब मुझे इस कहावत के पहले भाग पर लाता है जो कहता है, जिसमें आत्म-नियंत्रण का अभाव है वह बिना दीवारों के टूटे हुए शहर की तरह है। यहाँ क्या चल रहा है? यहां हमें रूपक को थोड़ा और खोलने की जरूरत है। रूपक का संबंध एक शहर और उसकी दीवारों से है।

और चूंकि इसकी कोई दीवारें नहीं हैं, इसलिए शहर में दुश्मन द्वारा संध लगाई जा रही है। यहां फिर से दुश्मनों के पास वापस आएं। और भावी नेता के लिए यह महत्वपूर्ण क्यों है? क्योंकि भावी नेता वही होता है जो शहर की देखभाल करता है।

नेता के आत्म-नियंत्रण के माध्यम से, किसी भी संभावित दुश्मन के खिलाफ शहर को सुरक्षात्मक रूप से घेरने के लिए एक दीवार बनाई जाएगी। और नेता के आत्म-नियंत्रण का उद्देश्य अपने समुदाय के लिए एक घर और आश्रय, एक सुरक्षात्मक और सुरक्षित वातावरण प्रदान करना है। यदि वे आत्म-नियंत्रण करने में विफल रहते हैं, तो यह सुरक्षात्मक, सुरक्षित वातावरण नष्ट हो रहा है।

समुदाय की रक्षा प्रणाली कमज़ोर हो गई है। और यदि समुदाय पर शहर की किसी भी बाहरी ताकतों का हमला होता है, तो समुदाय पराजय का खतरा बना रहता है। मेरा मानना है कि यह उन दो कहावतों का एक साथ प्रभाव है।

मुझे लगता है, अविश्वसनीय सलाह। यह मुझे एक चीनी कहावत की याद दिलाता है जो आत्म-नियंत्रण के इस मुद्दे को संबोधित करती है। और कहावत, और शायद इसका एक व्यापक संदर्भ है, और निश्चित रूप से, मैं चीनी संस्कृति की गहराई और सूक्ष्मताओं को पूरी तरह से नहीं समझता, लेकिन फिर भी मुझे यह कहावत उपयोगी लगती है।

और यह कुछ इस तरह कहता है, बिना किसी इच्छा वाला व्यक्ति अजेय है क्योंकि उन्हें उन लोगों की मांगों को पूरा करने के लिए हेरफेर, मजबूर या ब्लैकमेल नहीं किया जा सकता है जो उन्हें नुकसान पहुंचाना चाहते हैं। मैं आपके साथ एक प्रार्थना साझा करना चाहता हूं जो मैंने इन दो

छंदों की अपनी कल्पनाशील व्याख्या के आधार पर लिखी है, जैसा कि मैंने अभी इसे प्रस्तुत किया है। आइए मैं इसे आपको पढ़कर सुनाता हूँ।

तो, यह ऐसी चीज़ है जिसकी मैं हर दिन प्रार्थना करता हूँ। हे भगवान, मुझे सभी सांसारिक इच्छाओं से पूरी तरह मुक्त करके आप में अजेय बना दें। यहाँ यह पर्वत पर उपदेश का एक संकेत है।

ताकि मैं हमेशा सबसे पहले आपके राज्य की खोज कर सकूँ और हे भगवान, आप उन सभी चीज़ों को जोड़ सकें जिनकी मुझे आवश्यकता है और बहुत सी चीज़ें जो मैं चाहता हूँ और चाहता हूँ। और मैं प्रार्थना करता हूँ, हे भगवान, कि, नहीं, मुझे लगता है कि मुझे यहीं रुक जाना चाहिए। दरअसल, मैं थोड़ा और पीछे जाऊंगा और प्रार्थना थोड़ा पहले शुरू करूंगा।

तो, यह एक लंबी प्रार्थना का हिस्सा है। हे भगवान, मुझे मजबूत दीवारों, चौड़े द्वारों और एक गढ़ वाला एक मजबूत शहर बनाओ। मुझे आत्म-नियंत्रण देकर अपने लिए, अपने करीबी लोगों के लिए और मेरी देखभाल के लिए सौंपे गए सभी लोगों के लिए एक घर और आश्रय प्रदान करने में सक्षम और इच्छुक।

मेरे ऊपर आत्म-नियंत्रण, और फिर मैंने तीन या चार अलग-अलग चीज़ों का उल्लेख किया जहां मुझे पता है कि मैं असुरक्षित हूँ क्योंकि इन क्षेत्रों में आत्म-नियंत्रण करना मेरे लिए इतना आसान नहीं है और मैं आपको यह सोचने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि क्या हैं अपने जीवन के उन क्षेत्रों को ईश्वर के समक्ष प्रार्थना में रखें। मुझे आत्म-नियंत्रण दीजिए और फिर अंततः मैं एक नेता के रूप में अपनी महत्वाकांक्षाओं, अपनी इच्छाओं, अपनी चाहतों और यहां तक कि अपनी जरूरतों पर आत्म-नियंत्रण के साथ चीज़ों की इस सूची को बंद कर सकता हूँ। और यदि ऐसा होता है, तो मेरा विश्वास है, चीनी कहावत के अनुरूप, और मुझे यह भी लगता है कि यह कहावत यहां दीवार और शहर के साथ है, मुझे सभी सांसारिक इच्छाओं से पूरी तरह से मुक्त करके, आप में अजेय बना देती है।

ताकि मैं हमेशा सबसे पहले आपके राज्य की खोज कर सकूँ और हे भगवान, आप उन सभी चीज़ों को जोड़ सकें जिनकी मुझे आवश्यकता है और बहुत सी चीज़ें जो मैं चाहता हूँ और चाहता हूँ। आप यहां पर्वत पर उपदेश के संकेत भी सुन सकते हैं। तो, मैं कहना चाहता हूँ, आप जानते हैं, यह बस एक छोटी सी कहावत है जिसके साथ ज्यादातर लोग एक मिनट भी नहीं बिताते हैं लेकिन मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव से आपके साथ साझा कर सकता हूँ कि अकेले इन दो कहावतों ने उन अन्य लोगों के साथ मिलकर मेरा जीवन बदल दिया है।

उनके पास वास्तव में है। अब मैं कहावतों के तीसरे समूह की ओर मुड़ता हूँ। ये दो कहावतें हैं जो इन दोनों के ठीक सामने हैं जिन्हें मैंने अभी छंद 25 और 26 के साथ साझा किया है मुझे उन्हें पढ़ने दें।

जैसे प्यासे के लिए ठंडा पानी, वैसे ही दूर देश से आया शुभ समाचार। धर्मी लोग गंदे सोते या प्रदूषित सोते के समान हैं, जो दुष्टों के आगे झुक जाते हैं। यह किस बारे में है? फिर, रूपक की

लगातार व्याख्या उस अविश्वसनीय ज्ञान के लिए हमारी समझ और प्रशंसा को काफी समृद्ध करती है जो इन दो प्रतीत होता है कि काफी विनीत कहावतों में साझा किया जा रहा है।

और फिर, पहले की तरह, पहली कहावत दूसरी कहावत की समृद्ध व्याख्या और अनुप्रयोग के लिए परिदृश्य तैयार कर रही है। मैं श्लोक 25 से शुरू करता हूँ। जैसे प्यासे के लिए ठंडा पानी, वैसे ही दूर देश से आने वाली अच्छी खबर है।

मेरा मानना है कि दूर देश से आने वाली अच्छी खबर शायद इस लौकिक जोड़ी के लिए आवश्यक भी नहीं है, लेकिन तथ्य यह है कि ऐसी अच्छी खबर जो कुछ भी हो, उन प्राचीन दिनों में भी अंतरराष्ट्रीय सहायता हो सकती है, दूर देश से यह अच्छी खबर भावनात्मक, शारीरिक और सामाजिक होती है लोगों के समुदाय पर प्रभाव एक प्यासी आत्मा के लिए ठंडे पानी के बराबर है। यह ताज़ा है। यह पौष्टिक है।

यह जीवनदायी है। यह वह रूपक छवि है जिसे यहां अच्छी खबर के रूप में दर्शाया जा रहा है जो एक समुदाय में अप्रत्याशित रूप से दूर से ऐसे लोगों से आती है जो शायद किसी भी स्थिति में मदद करने के दायित्व या प्रत्यक्ष दायित्व के तहत भी नहीं हैं। तो, हमारे पास कहावत है कि नंबर एक वे लोग हैं जो मदद कर रहे हैं, जो अप्रत्याशित क्षेत्रों से अच्छी खबरें ला रहे हैं, जिन पर ऐसा करने का दायित्व नहीं है, लेकिन वे अपने दिल की भलाई या जो कुछ भी करते हैं, उससे ऐसा करते हैं।

और बिना कुछ किए अब वे जो कर रहे हैं उसका प्रभाव जीवन को बनाए रखने वाला, पौष्टिक, ताज़गीभरा, सुंदर है। अब दूसरी कहावत पर आते हैं। धर्मी लोग गंदे सोते या प्रदूषित सोते के समान हैं, जो दुष्टों के आगे झुक जाते हैं।

किस बारे में है? अधिकांश लोग इसे पढ़ते हैं और सोचते हैं कि ओह, आप जानते हैं कि सबसे पहले इसकी व्यक्तिगत व्याख्या करें। तो, यह एक ऐसी स्थिति हो सकती है जहां धर्मी दुष्टों के सामने रास्ता छोड़ देता है। संभवतः, अधिकांश लोग किसी के साथ विवाद की स्थिति के बारे में सोच सकते हैं और अक्सर विशेष रूप से ईसाई किसी दुष्ट व्यक्ति की जबरदस्ती या किसी भी मांग के आगे झुक जाते हैं क्योंकि अक्सर ईसाई अपने पड़ोसी से प्रेम करने के आदेश को गलत समझते हैं। दुर्व्यवहार स्वीकार करने के निमंत्रण के रूप में अपने शत्रुओं से प्रेम करना।

इसे अनदेखा नहीं करते हैं, तो वे बस यही कह सकते हैं कि ओह, शायद यह एक अच्छा विचार होगा यदि मैं कभी-कभार अपने लिए खड़ा हो जाऊं और यह उनके लिए बेहतर होगा मैं और मैं एक स्पष्ट वसंत या ऐसा कुछ होंगे। अगर मैं अपने लिए खड़ा होऊं तो मेरा जीवन बेहतर होगा। लेकिन याद रखें कि यह नेतृत्व निर्माण के संदर्भ के बारे में है और पिछली कहावत ने हमें अप्रत्याशित क्षेत्रों से एक समुदाय को मिलने वाली मदद के बारे में बताया था।

और यह मुझे उस छवि पर वापस लाता है कि पानी ताज़गी देने वाला है, जीवन को बनाए रखने वाला है और शायद उन लोगों को भी बचाता है जो प्यासे हैं और प्रतिकूल वातावरण में प्यास से मर रहे हैं। और इसलिए पानी की कल्पना के अनुरूप जीवन देने वाली जल की कल्पना अब मैं नोटिस करता हूँ और इस तथ्य पर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि श्लोक 26 में धर्मी लोगों

की तुलना साफ झरनों और शुद्ध फव्वारों से की गई है। जीवन-वर्धक होने के संदर्भ में एक धर्मी व्यक्ति की तुलना एक स्वच्छ झरने और एक शुद्ध फव्वारे से करने का क्या रूपक प्रभाव है? यह स्पष्ट है कि यदि वह धर्मी व्यक्ति एक शुद्ध झरना और एक स्वच्छ झरना है, तो वे विशेष रूप से नेतृत्व की जिम्मेदारी की स्थिति में क्या कर रहे हैं, नेता के रूप में उनका उद्देश्य अपने समुदायों के लिए जीवन-वर्धक होना है, विशेष रूप से उन लोगों के संदर्भ में जो कमजोर हैं। जो स्वयं की सहायता नहीं कर सकते, उन्हें उन लोगों द्वारा व्यापक सामुदायिक सुरक्षा के समर्थन की आवश्यकता है जिनके पास ऐसा करने की शक्ति है।

और इसी सन्दर्भ में अब हमारी कहावत कह रही है कि जब धर्मी लोग दुष्टों के आगे हार मान लेते हैं तो वे जीवन का व्यर्थ स्रोत बन जाते हैं। वे अब उद्देश्य के लिए उपयुक्त नहीं हैं। वे अब कीचड़युक्त झरना और प्रदूषित फव्वारा हैं।

जिन लोगों को उनके काम से फायदा होना चाहिए, वे अब ऐसा नहीं कर सकते। क्योंकि ये तथाकथित धर्मी लोग दबाव के आगे झुककर दुर्व्यवहार की मांग करते हैं और उन दुष्टों के खतरे की मांग करते हैं जो अपने समुदाय को खतरे में डाल रहे हैं क्योंकि वे दबाव के आगे झुक रहे हैं और अब वे अपने समुदाय की मदद नहीं कर रहे हैं। और आखिरकार जो बात उन्हें कभी धर्मी बनाती थी, वह यह कि वे अपने समुदाय को लाभ पहुंचा रहे हैं, कमजोर लोगों की रक्षा कर रहे हैं, बुराई का विरोध कर रहे हैं, अब ऐसा नहीं हो रहा है।

वे अपना उद्देश्य खो चुके हैं। उनकी धार्मिकता अब आत्म-धार्मिकता भी नहीं रही। वे समस्या का हिस्सा बन गए हैं।

वे दुष्ट हैं। मुझे अक्सर यह कहावत कहनी पड़ती है कि गंदे झरने या प्रदूषित फव्वारे की तरह तथाकथित धर्मी ही होते हैं जो दुष्टों के सामने रास्ता दे देते हैं। ये कहावत रात को सोने नहीं देती और ना ही आपको भी रात को सोने देना चाहिए।

यह हमें इस व्याख्यान के अंत तक लाता है।

यह डॉ. नॉट हेम और नीतिवचन की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र संख्या 15, नीतिवचन अध्याय 25-29 है।